

« *Ce qu'il y a de meilleur* » (1 Corinthiens 14)

**Résumé :** L'amour de Dieu, exprimé dans l'ordre et la clarté, fait mûrir l'Église et interpelle le monde. Ça parle au monde.

**1. L'objectif suprême: l'édification de l'église**

- La prophétie pour édifier

---

---

---

---

---

---

---

- Les langues, un don utile, mais secondaire

---

---

---

---

---

---

---

- L'impact évangélique

---

---

---

---

---

---

---

**2. Le moyen par excellence : L'amour, l'ordre et la clarté**

- Compréhensible

---

---

---

---

---

---

---

- Structuré

---

---

---

---

---

---

- Maîtrise de soi

---

---

---

---

---

---

**3. La posture indispensable : le discernement et la soumission mutuelle**

- Discernement

---

---

---

---

---

---

- Implication des hommes et des femmes

---

---

---

---

---

---

- Soumission réciproque

---

---

---

---

---

---